

आ गयी सृष्टि... पृष्ठ 2 का शेष

हम ब्रह्मा-वत्स कितने भाग्यशाली हैं जिनका सारथी स्वयं भगवान है। हमें निश्चित रूप से पता है विजय हम पाण्डवों की है। यह विजय कल्प-कल्प हमें ही मिलती है। पाण्डवों की ही प्रीत बुद्धि का गायन है। दुनिया वाले वर्तमान व आने वाले समय से कितना घबराते हैं जबकि हमें तो मालूम ही है कि वर्तमान में यह सृष्टि धर्मराजपुरी में परिवर्तित हो गयी है। सभी को अपनी आत्मा के हिसाब-किताब चुक्तु करने हैं।

समय की आवश्यकता:- आज धर्मग्लानि के समय परमात्मा अपने वादे के अनुसार सच्चा-सच्चा गीता-ज्ञान देने के लिए गुप्त रूप से कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा दिये जा रहे सत्य-ज्ञान को परखकर धारण करना ही आज समय की मांग है। केवल एक अर्जुन को गीता-ज्ञान मिलने से सत्यधर्म की स्थापना नहीं हो सकती। जब अनेक आत्माएं ज्ञान और योग से सतोगुणी बनेंगी तभी सत्यधर्म की स्थापना होगी। आज अनासक्त वृत्ति वाले मन, वचन और कर्म से, दृष्टि-वृत्ति से पवित्र आत्माओं का समय आह्वान कर रहा है जो गीता का परिणाम है। यह युग परिवर्तन का समय है। युग अवश्य ही बदलेगा क्योंकि समय परिवर्तनशील है। जो कल था वह आज नहीं है, जो आज है वह कल न होगा।

वास्तव में आत्मा स्वयं अपना मित्र व शत्रु है। अतः स्वयं को अपना मित्र समझकर काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार जैसे राक्षसों से छूटने के लिए परमात्मा द्वारा सिखाये जा रहे ज्ञान को धारण कर राजयोग का निरंतर अभ्यास करना चाहिए ताकि आत्मा पर अनेक जन्म-जन्मान्तर का लगा मैल साफ हो सके। क्योंकि समस्त आत्माओं के वापस जाने का अब समय बहुत नजदीक आ गया है। आत्माओं के प्रियतम परमपिता परमात्मा स्वयं कहते - “बच्चो, अब घर वापिस जाने का समय आ गया है। अपने को आत्मा समझ मुझ पिता और स्व के घर परमधाम को याद करो। मैं तुम सब बच्चों को लेने आया हूँ और मच्छरों सदृश्य उड़ाकर ले जाऊंगा...।” अतः अपने को स्वर्णिम दुनिया में आने का पात्र बनाने के लिए परम पवित्र परमपिता से प्रीत की डोर जोड़कर पवित्र बनना व बनाने का पुरुषार्थ तेज कर देना ही हितकर है।

परिवर्तन के लिए ...पृष्ठ 1 का शेष

लिए उसके पास समय नहीं है। आज से काफी समय पहले भारत स्वर्ग था और इसे सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था। उस समय एक धर्म, एक भाषा और एक राज्य था। लेकिन धीरे-धीरे आध्यात्मिकता से दूर होने के कारण मनुष्य विकारों के अधीन होकर शक्तिहीन हो गये हैं। आज धर्म की धारणा और पवित्रता समाप्त हो चुकी है। उन्होंने कहा कि अब नई स्वर्णिम दुनिया की स्थापना करने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं।

इंदौर जोन के क्षेत्रीय निदेशक और मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.ओमप्रकाश ने कहा कि पहले दुनिया में सार था, इसलिए इसे संसार कहा गया। किंतु आज यही दुनिया समस्याओं का घर बन चुका है। जिसके कारण मानव जीवन से सुख-शांति खत्म हो गयी है। और वह भौतिक सुखों को ही सच्चा सुख मानने लगा है।

इजरायल की शैरोना स्टीलरमेन ने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि आज से 15 वर्ष पूर्व जब मैं बोस्टन युनिवर्सिटी में सीनियर लेक्चरर थी तो उनके जीवन में भौतिक सुख के समस्त साधन होने के बाद भी खालीपन महसूस होता था। और मैं सत्य की खोज में भटक रही थी। तभी मुझे इस संस्था का परिचय मिला। उन्होंने कहा कि आत्मा और परमात्मा के ज्ञान ने उन्हें काफी प्रभावित किया।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ की संचालिका ब्र.कु.कमला ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और उद्योग एवं व्यापार प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा ब्र.कु.योगिनी ने राजयोग मेडिटेशन के द्वारा सभी को गहन शांति की अनुभूति कराई।

बीती हुई बातों को अपने मन पर हावी न होने दें

प्रश्न:- क्या मैं उसी प्रकार के दुःख का अनुभव भी करूंगी ?

उत्तर:- हाँ, क्योंकि आप फिर से उसी थॉट को क्रियेट कर रहे हैं।

प्रश्न:- जब वही परिस्थिति फिर से हमारे सामने आती है तो मुझे यही डर लगा रहता है कि कहीं फिर से ऐसा न हो जाये !

उत्तर:- इसका कारण हमारे बीते हुए समय का अनुभव है। जब मैं आपसे अंतिम बार मिली थी तो आपने मुझसे अच्छी तरह से व्यवहार नहीं किया था। अब इस बात को मैंने अपने अंदर पकड़ ली और उसे बार-बार मैं अपने अंदर रिपीट करती रही हूँ। जब मैं अगले दिन आपसे फिर से मिलने वाली हूँ तो उससे पहले अपने साथ बैठकर वो पिछले अनुभव की बात को डिस्कस करके अपने मन से निकाल दें। हाँ, भले बात नहीं की लेकिन मैं इसको अपनी सोच पर हावी होने नहीं दूंगी।

प्रश्न:- इसका मतलब कि मैं उनको शक का फायदा दे दूँ ?

उत्तर:- एक है शक का फायदा देना, दूसरा है कि वह व्यक्ति भी अपसेट हो सकता है और तीसरा है जब मुझे सम्मान नहीं मिल रहा हो तब भी हम ढंग से बात कर सकते हैं, नहीं तो मेरा और आपका रिश्ता बिगड़ता ही जायेगा, क्योंकि मैं अपने बीते हुए अनुभव को अगले सीन पर हावी होने दे रही हूँ। कल शायद आपका मूड ठीक नहीं था। लेकिन हो सकता है, आज आप बिल्कुल ठीक हो लेकिन आज मैंने अपने वो अनुभव को आगे बढ़ा दिया। फिर मैं वो पिछले

शुश्रूमा जीवन जीने की कला

(अवेकनिंग विथ ब्रह्माकुमारी से)



-ब्र.कु.शिवानी

अनुभव को लेकर आपके पास आती हूँ तो मैं आपको उसी दृष्टि से देखती हूँ। यदि आप उस समय ठीक भी होंगे तो मुझे ठीक नहीं लगेगा। क्योंकि मैंने आपके बारे में यह सोच लिया है कि ये तो ऐसे ही हैं।

इसलिए हर रोज रात को अपने साथ थोड़ी देर बैठें, यह भी एक तरह से मेडिटेशन ही है। हर रोज रात को पांच-दस मिनट बैठकर अपने दिन का चार्ट, जैसे लोग लेटर और अपनी डायरी लिखते हैं, तो डायरी में क्या करते हैं? सिर्फ परिस्थिति के बारे में लिख देते हैं कि आज मेरे साथ ऐसा हुआ, वैसा हुआ। वो तो सिर्फ अपना एक रिकार्ड बना लिया, इससे उन्होंने कुछ सीखा नहीं, लेकिन आप अपने दिन में घटी हुई घटनाओं को एक-एक कर देखें कि उसमें आप ने किसी के प्रति हर्ट क्रियेट किया, किसी के प्रति घृणा का भाव पैदा किया तो उसे आपने यहां और ही पक्का कर लिया। अगर आप उसको भूल सकते हो तो भले उन परिस्थितियों को देखो लेकिन ऐसा न हो कि आप फिर से दुःखी हो जाओ। उस परिस्थिति को देखो और फिर अपने आपको देखो। अगर इस समय मैं अपने थॉट को थोड़ा सा बदल दूँ, तो मैं अपने बिगड़े हुए सम्बन्ध को ठीक कर सकती हूँ। मैं आज अगर इसे अपने मन से साफ नहीं करती तो हार्ड डिस्क में ये जो सारा इकट्ठा हो गया है, वो मेरे अगले दिन पर स्वतः ही चला जाता है। इसलिए मन रूपी हार्ड डिस्क को प्रतिदिन सफाई करना जरूरी है। हर रोज अपने मन को कम्प्यूटर की तरह स्कैन करें। उन्होंने जो किया सो किया, हमें उसे आगे नहीं ले जाना है। ये हम तभी कर पायेंगे जब हम उसे रियलाइज करेंगे।

दूसरे का व्यवहार कैसा भी है, लेकिन मेरी सोच फिर भी अपनी रचना है और इसका निरंतर अभ्यास करे। मान लो कि आज सुबह किसी के साथ कार्य करते हुए मुझे गुस्सा आ गया तो मैं रात को सोने के समय उस सीन को अपने सामने लाती हूँ। उस समय मैं ये सोच सकती हूँ कि मैं इसे किसी और तरीके से भी हैंडल कर सकती थी। जब हम उस सीन को फिर से देखते हैं तब हमें समझ में आता है कि इसका दूसरा रास्ता भी था। (क्रमशः)



थुनाग (मण्डी)। ब्र.कु.शीला को मोमेंटो देकर सम्मानित करते हुए ग्राम पंचायत मंत्री जयराम ठाकुर व तहसीलदार अनिल शर्मा।



सोडाला (जयपुर)। 'प्लेटिनम जुबली महोत्सव' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सांसद लालचंद कटरिया, महंत रामप्रसाद दास, ब्र.कु.पुनम।



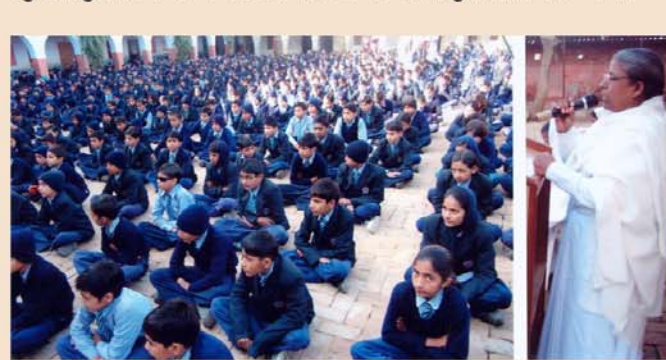
जलालाबाद। स्वामी मनोजानन्द को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुर्मिष्ठा।



झाबुआ। 'अमृत महोत्सव' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य न्यायाधीश सुभाष सोलंकी, जिलाधिकारी जयश्री कियावत, पुलिस अधीक्षक आर.पी.सिंह, विशेष न्यायाधीश श्रीवास्तव, ब्र.कु.जयंति।



सामाना। सेवाकेंद्र पर आयोजित 'रक्त दान शिविर' में अपना रक्त देते हुए ब्र.कु.दीपक साथ में हैं डॉ.राकेश बिरमी, ब्र.कु.शांता तथा अन्य।



दिणावा मण्डी। हायर सेकण्डरी विद्यालय में 'वैल्युज एज्यूकेशन' पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ब्र.कु.शकुंतला।